कुछ जोड़ा नहीं जा सकता। हमने सब विचारों का स्वागत किया है। ऐसे विचारों, तत्वज्ञान और सिद्धान्तों का स्वागत करने की कसौटी रही है – समाज हित। अर्थात्, चिन्तन मानव कल्याण से सुसंगत है या नहीं। यही भारत की चिरन्तनता का कारण है। अन्यथा इतने आक्रमणों के बाद भारत, भारत नहीं रहता। विश्व मंच पर भारतीय समाज नहीं दिखता। हम चेतना युक्त, प्राण युक्त, नित्य निरन्तर प्रवाहित जीवन को स्वीकार करने वाले लोग हैं।

विभिन्न प्रकार के शब्दों को समझने के लिए अनुवाद करने की परम्परा है। धारा के प्रवाह में हम कई बार इस बारीकी को समझ नहीं पाते। परन्तु अनुवाद से शब्दों के भाव का, तथा उसकी गहराई व विशिष्टता की संकल्पना करना कठिन हो जाता है। ऐसी संकल्पना को परिभाषा की चौखट में बिठाने का प्रयास भी असफल हो जाता है। उदाहरणतः, पाश्चात्य चिन्तन के अनुसार संघटकों के आधार पर परिभाषित करने से परिवार का भाव स्पष्ट हो सकता है क्या? भारत में परिवार की जो कल्पना टिक पायी, वह विदेशों में नहीं टिक पायी। क्योंकि वहां परिवार कानून से बनाया जाता है। हमारे यहां सामाजिक मान्यता से बना। अपने यहां विवाह का रजिस्ट्रेशन अंग्रेजों के आगमन के बाद से हुआ। पंजीकरण में बंधने और टूटने के कानून बने।

इसी तरह, वैकल्पिक शब्द ढूंढने का प्रयास करना भी व्यर्थ है। 'प्रसाद' और 'आरती' के लिए कोई वैकल्पिक शब्द हैं क्या अंग्रेजी भाषा में? हो भी नहीं सकते। क्योंकि वहां इनकी कल्पना नहीं है। शब्द समूहों से वैकल्पिक शब्द ढूंढा भी जाए तो भाव का क्षरण हो जाएगा। तीर्थ क्षेत्र को 'होली प्लेस' से नहीं बदला जा सकता है। यज्ञ के लिए कोई संकल्पना नहीं। झूठे शब्दों से भाव बदलने की कोशिश में सार्थकता नहीं है। 'जिहाद' के लिए अपने यहां कोई शब्द नहीं हैं। क्योंकि हमारे समाज में इनकी कल्पना नहीं है। वैकल्पिक शब्दों से स्पष्टता और भाव प्रकट नहीं हो पाते।

दुर्भाग्य से, विदेशी आक्रमकों ने भारतीय संकल्पनाओं की जगह, अपनी संकल्पनाओं के आधार पर समकक्ष शब्द ढूंढे। लेकिन वे वास्तविक अर्थ के निकट ही पंहुच पाए, सही अर्थ तक नहीं। कुछ शब्दों को उन्होंने सोची समझी रणनीति के अन्तर्गत बदलने का प्रयास किया। वही शिक्षा नीति में भी आया। उसी शिक्षण के चलते एक प्रबुद्ध वर्ग अंग्रेजों की संकल्पनाओं को